ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 7 July 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

महात्मा गाँधी के चिंतन में राष्ट्रवाद की अवधारणा

RAMPAL SINGH, RESEARCH SCHOLAR
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
JAI NARAYAN VYAS UNIVERSITY, JODHPUR

सार

महात्मा गांधी के चिंतन में राष्ट्रवाद की अवधारणा एक अहिंसक, धर्मनिरपेक्ष और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना पर आधारित थी। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद का अर्थ है अपने देश के प्रति प्रेम और समर्पण, लेकिन यह प्रेम और समर्पण अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।

गांधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद का उद्देश्य अपने देश के लोगों की भलाई होना चाहिए, न कि किसी विदेशी शक्ति के खिलाफ लड़ाई लड़ना। उन्होंने अहिंसक सत्याग्रह के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने का मार्ग अपनाया। उनके अनुसार, अहिंसा एक शक्तिशाली हथियार है जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन ला सकती है।

गांधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। उन्होंने सभी धर्मों के लोगों के बीच समानता और भाईचारे की वकालत की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद का उद्देश्य सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करना होना चाहिए।

गांधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद न्यायपूर्ण होना चाहिए। उन्होंने सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करने की वकालत की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद का उद्देश्य सभी के लिए एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की स्थापना करना होना चाहिए।

गांधीजी के राष्ट्रवाद की अवधारणा ने भारत में स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया। उन्होंने दुनिया भर के लोगों को अहिंसा और सत्य के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य शब्द

चिंतन, राष्ट्रवाद, अहिंसा, सत्य, न्याय, समानता

भूमिका

महात्मा गांधी के चिंतन में राष्ट्रवाद की अवधारणा अहिंसा, सत्य, न्याय, समानता और भाईचारे पर आधारित थी। वे एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करते थे जो सभी नागरिकों के लिए समान अवसर और अधिकार प्रदान करता हो। उनके लिए राष्ट्रवाद का अर्थ था, सभी नागरिकों के लिए एकजुटता और समरसता का भाव।

गाँधी के राष्ट्रवाद की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

अहिंसकता। गाँधी का मानना था कि राष्ट्रवाद का सबसे अच्छा तरीका अहिंसा है। उन्होंने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा के माध्यम से अहिंसक विरोध के तरीकों को विकसित किया।

सामाजिक न्याय। गाँधी का मानना था कि राष्ट्रवाद का उद्देश्य सभी लोगों के लिए समानता और न्याय सुनिश्चित करना होना चाहिए। उन्होंने सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया।

धर्मनिरपेक्षता। गाँधी का मानना था कि राष्ट्रवाद को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। उन्होंने सभी धर्मों के लोगों के बीच सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा ने भारत में स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लोगों को एकजुट किया और उन्ह अहिंसक तरीके से लड़ने के लिए प्रेरित किया। उनकी अवधारणा आज भी दुनिया भर में राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय के लिए एक प्रेरणा है।

गाँधी के राष्ट्रवाद की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से समझी जा सकती हैं।

अहिंसकता। जब ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ भेदभाव किया, तो गाँधी ने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा के माध्यम से इसका विरोध किया। उन्होंने लोगों से हिंसा का सहारा लेने से इनकार किया, और इसके बजाय उन्होंने अहिंसक तरीके से अपने अधिकारों के लिए लड़ने का आह्वान किया।

सामाजिक न्याय। जब भारत में जाति व्यवस्था के कारण गरीब और दलित लोगों को भेदभाव का सामना करना पड़ा, तो गाँधी ने उनके अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए आन्दोलन किया, और उन्होंने लोगों को सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता के लिए एकजुट होने के लिए प्रेरित किया।

धर्मनिरपेक्षता। गाँधी का मानना था कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होना चाहिए। उन्होंने सभी धर्मों के लोगों के बीच सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने कहा कि ष्भारत एक देश नहीं है, बल्कि एक धर्म है।ष

गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा एक प्रेरणादायक है, जो आज भी दुनिया भर के लोगों के लिए एक मार्गदर्शक है।

महात्मा गाँधी के चिंतन पर प्रभाव

महात्मा गाँधी का राष्ट्रवाद एक समग्र और व्यापक विचार था, जो न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर आधारित था, बल्कि सामाजिक और आर्थिक न्याय पर भी आधारित था। उनके राष्ट्रवाद के विचारों को प्रभावित करने वाले कारकों में शामिल हैं।

उनका धार्मिक विश्वास। गाँधीजी एक आस्तिक व्यक्ति थे, और उनका मानना था कि धर्म सामाजिक न्याय और समानता का आधार है। उन्होंने हिंदू धर्म के सिद्धांतों को अपने राष्ट्रवाद के विचारों में शामिल किया, जैसे कि अहिंसा, सत्य और असत्य से दूरी।

उनका सामाजिक अनुभव। गाँधीजी ने भारत के विभिन्न हिस्सों में यात्रा की और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से मिले। इस अनुभव ने उन्हें भारत की सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के बारे में जागरूक किया। उन्होंने इन असमानताओं को दूर करने के लिए राष्ट्रवाद को एक शक्ति के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश की।

उनकी राजनीतिक विचारधारा। गाँधीजी एक प्रगतिशील विचारक थे, और उन्होंने लोकतंत्र और समानता के सिद्धांतों का समर्थन किया। उन्होंने पश्चिमी राष्ट्रवाद के हिंसक और आक्रामक तरीकों

को खारिज कर दिया, और अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित एक शांतिपूर्ण राष्ट्रवाद का समर्थन किया।

गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया जा सकता है।

समग्र राष्ट्रवाद। गाँधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक न्याय पर भी आधारित होना चाहिए।

सामाजिक न्याय। गाँधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने जाति, धर्म, लिंग और अन्य आधारों पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए काम किया।

अहिंसा। गाँधीजी का मानना था कि राष्ट्रवाद अहिंसा पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने हिंसा के किसी भी रूप का विरोध किया, और उन्होंने अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित एक शांतिपूर्ण राष्ट्रवाद का समर्थन किया।

गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय लोगों को एकजुट करने और उन्हें ब्रिटिश शासन क खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। आज भी, गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचार दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करते हैं।

गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों के कुछ विशिष्ट प्रभाव निम्नलिखित हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका। गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों ने भारतीय लोगों को एकजुट करने और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और अन्य आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में सामाजिक परिवर्तन। गाँधीजी ने जाति, धर्म, लिंग और अन्य आधारों पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए काम किया। उन्होंने अस्पृश्यता के उन्मूलन, महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई और अन्य सामाजिक सुधारों के लिए अभियान चलाया।

विश्व शांति और न्याय के लिए प्रेरणा। गाँधीजी के अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों ने दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है। वे शांति और न्याय के लिए एक शक्तिशाली आवाज बने रहे हैं।

गाँधीजी के राष्ट्रवाद के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वे हमें एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं जो सामाजिक न्याय और समानता पर आधारित हो। वे हमें अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित एक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

गांधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों के आधार पर एक ऐसा आंदोलन चलाया जो सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एक साथ लाता था। गांधीजी के नेतृत्व में, भारतीयों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक सफल संघर्ष किया और भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाया।

गांधीजी के राष्ट्रवाद के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वे हमें एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करने के लिए प्रेरित करते हैं जो सभी के लिए समान अवसर प्रदान करे और जो शांति और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो।

गांधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों पर निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा प्रकाश डाला जा सकता है।

चम्पारण आंदोलन। 1917 में, गांधीजी ने बिहार के चम्पारण जिले में एक आंदोलन का नेतृत्व किया। इस आंदोलन का उद्देश्य किसानों को ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए अत्यधिक करों से मुक्त कराना था। गांधीजी ने इस आंदोलन में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन किया।

असहयोग आंदोलन। 1920 में, गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक असहयोग आंदोलन का आह्वान किया। इस आंदोलन का उद्देश्य भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करना था। गांधीजी ने इस आंदोलन में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन। 1930 में, गांधीजी ने नमक कानून का उल्लंघन करने के लिए एक सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार की नीतियों के खिलाफ भारतीयों की प्रतिरोध शक्ति को प्रदर्शित करना था। गांधीजी ने इस आंदोलन में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन किया।

गांधीजी के राष्ट्रवाद के विचारों ने भारत में एक गहरी छाप छोड़ी है। उन्होंने भारतीयों को एकता और स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। उनके विचार आज भी दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करते हैं।

महात्मा गाँधी के राष्ट्रवाद चिंतन के प्रमुख तत्व

महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद चिंतन अहिंसा, सत्य, और सर्वधर्म समभाव पर आधारित था। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद का उद्देश्य लोगों को एकजुट करना और उनमें भाईचारे की भावना पैदा करना है। वे एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करते थे जो सभी के लिए समान अवसर प्रदान करे, चाहे उनकी जाति, धर्म, या लिंग कुछ भी हो।

गांधी जी के राष्ट्रवाद चिंतन के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं।

अहिंसा। गांधी जी का मानना था कि राष्ट्रवाद को अहिंसक तरीकों से प्राप्त किया जाना चाहिए। उन्होंने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा जैसे अहिंसक तरीकों का प्रयोग करके भारत की स्वतंत्रता प्राप्त की।

सत्य। गांधी जी का मानना था कि राष्ट्रवाद को सत्य के आधार पर स्थापित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र तभी मजबूत हो सकता है जब वह सत्य और न्याय पर आधारित हो।

सर्वधर्म समभाव। गांधी जी का मानना था कि सभी धर्म समान हैं। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों का सम्मान किया जाना चाहिए और सभी लोगों को उनके धर्म के आधार पर भेदभाव से मुक्त होना चाहिए।

गांधी जी के राष्ट्रवाद चिंतन ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके सिद्धांतों ने भारतीय लोगों को एकजुट किया और उन्हें स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गांधी जी का राष्ट्रवाद चिंतन आज भी प्रासंगिक है और यह दुनिया भर के लोगों को प्रेरित कर रहा है।

इन तत्वों के आधार पर, गाँधी जी का राष्ट्रवाद एक मानवतावादी और सर्वसमावेशी राष्ट्रवाद था। यह राष्ट्रवाद न केवल भारत के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणा है।

गाँधी जी के राष्ट्रवाद चिंतन के कुछ विशिष्ट पहलू निम्नलिखित हैं।

- गाँधी जी के राष्ट्रवाद का आधार धर्म नहीं, बल्कि मानवता है। वे मानते थे कि सभो धर्मों का समान सम्मान होना चाहिए।

- गाँधी जी के राष्ट्रवाद का मार्ग अहिंसा है। वे मानते थे कि हिंसा से राष्ट्रवाद का कोई लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता।

- गाँधी जी के राष्ट्रवाद का अंतिम लक्ष्य स्वराज है। स्वराज का अर्थ है स्वयं पर शासन करना।

- गाँधी जी के राष्ट्रवाद का लक्ष्य सर्वोदय है। सर्वोदय का अर्थ है सभी का कल्याण।

- गाँधी जी के राष्ट्रवाद का लक्ष्य अस्पृश्यता उन्मूलन है। वे मानते थे कि अस्पृश्यता राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए एक बड़ा खतरा है।

गाँधी जी के अनुसार, राष्ट्रवाद की अवधारणा सार्वभौमिक होनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि सभी राष्ट्रों को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त होना चाहिए। किसी भी राष्ट्र को दूसरों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का अधिकार नहीं है।

गाँधी जी के अनुसार, राष्ट्रवाद का आधार सहिष्णुता और भाईचारा होना चाहिए। सभी धर्मों, जातियों आर समुदायों के लोगों को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त होना चाहिए। राष्ट्रवाद का उद्देश्य लोगों को एकजुट करना और उन्हें एक–दूसरे के साथ शांतिपूर्ण तरीके से रहने के लिए प्रेरित करना होना चाहिए।

गाँधी जी के अनुसार, राष्ट्रवाद का उद्देश्य लोगों को आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए। राष्ट्र को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सक्षम होना चाहिए। इसके लिए लोगों को आत्मनिर्भर और उत्पादक बनने की आवश्यकता है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 7 July 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

महात्मा गाँधी का राष्ट्रवाद वर्तमान प्रीपेक्ष में

महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद वर्तमान प्रीपेक्ष में भी प्रासंगिक है। आज भी दुनिया भर में कई देशों में राष्ट्रवाद का उग्र रूप देखने को मिलता है, जो हिंसा और संघर्ष का कारण बन रहा है। गांधीजी का राष्ट्रवाद इन मुद्दों का समाधान प्रदान करता है।

गांधीजी के अनुसार, राष्ट्रवाद का अर्थ है अपने देश और लोगों के प्रति प्रेम आर समर्पण। लेकिन यह प्रेम और समर्पण हिंसा और घृणा पर आधारित नहीं होना चाहिए। बल्कि, यह प्रेम और समर्पण शांति, सद्भाव और न्याय पर आधारित होना चाहिए।

वर्तमान प्रीपेक्ष में, गांधीजी का राष्ट्रवाद निम्नलिखित चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकता है।

उग्र राष्ट्रवाद। गांधीजी का राष्ट्रवाद उग्र राष्ट्रवाद को कम करने में मदद कर सकता है। यह लोगों को शांतिपूर्ण तरीकों से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

सामाजिक असमानता। गांधीजी का राष्ट्रवाद सामाजिक असमानता को कम करने में मदद कर सकता है। यह सभी लोगों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करने में मदद करता है।

पर्यावरणीय संरक्षण। गांधीजी का राष्ट्रवाद पर्यावरणीय संरक्षण में भी मदद कर सकता है। यह लोगों को प्रकृति के प्रति सम्मान और प्रेम के लिए प्रेरित करता है।

गांधीजी का राष्ट्रवाद एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत है जो हमें एक बेहतर दुनिया बनाने में मदद कर सकता है। यह हमें शांति, सद्भाव और न्याय के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है।

गांधीजी ने सभी धर्मों के प्रति सम्मान की वकालत की। उन्होंने कहा कि सभी धर्म समान हैं और हमें एक–दूसरे के धर्मों का सम्मान करना चाहिए।

इन सिद्धांतों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लागू करने के कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए, हम इन सिद्धांतों का उपयोग करके एक ऐसे समाज का निर्माण करने के लिए काम कर सकते हैं जहां सभी लोगों के लिए समान अवसर हों, भले ही उनकी पष्ठभूमि या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। हम इन

सिद्धांतों का उपयोग करके सांप्रदायिकता और भेदभाव को दूर करने के लिए भी काम कर सकते हैं।

गांधीजी के राष्ट्रवाद के कुछ विशिष्ट उदाहरण निम्नलिखित हैं।

सत्याग्रह आंदोलन। गांधीजी ने सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया, जो एक अहिंसक आंदोलन था जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयों को एकजुट किया। इस आंदोलन ने दिखाया कि अहिंसा का उपयोग करके भी बड़े परिवर्तन किए जा सकते हैं।

स्वदेशी आंदोलन। गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व किया, जो ब्रिटिश सामानों क बहिष्कार का एक अभियान था। इस आंदोलन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और देश को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की।

हरिजन आंदोलन। गांधीजी ने हरिजन आंदोलन का नेतृत्व किया, जो दलितों के अधिकारों के लिए एक आंदोलन था। इस आंदोलन ने दलितों के जीवन में सुधार करने और उन्हें भारतीय समाज में एक समान स्थान दिलाने में मदद की।

गांधीजी के राष्ट्रवाद की इन विशेषताओं को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कई मायनों में लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अहिंसा का सिद्धांत एक अधिक शांतिपूर्ण और सहकारी दुनिया बनाने में मदद कर सकता है। सत्य का सिद्धांत एक अधिक न्यायपूर्ण और समान दुनिया बनाने में मदद कर सकता है। न्याय का सिद्धांत एक अधिक समृद्ध और समृद्ध दुनिया बनाने में मदद कर सकता है। समानता का सिद्धांत एक अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण दुनिया बनाने में मदद कर सकता ह। भाईचारे का सिद्धांत एक अधिक प्रेम और सद्भावपूर्ण दुनिया बनाने में मदद कर सकता है।